आदिवासी समाज और संस्कृति

डॉ. संदीप श्रीराम पाईकराव
डॉ. ए.डी. चावडा

आदिवासी समाज और संस्कृति डॉ. संदीप श्रीराम पाईकराव, डॉ. ए.डी. चावडा

परिकल्पना
बी-7, सरस्वती काम्प्लेक्स, तृतीय तल, सुभाष चौक
लक्ष्मीनगर, दिल्ली-110092, मो.: 9968084132
e-mail : parikalpana.delhi2016@gmail.com

ISBN 978-93-87859-85-2
9 789387 859852

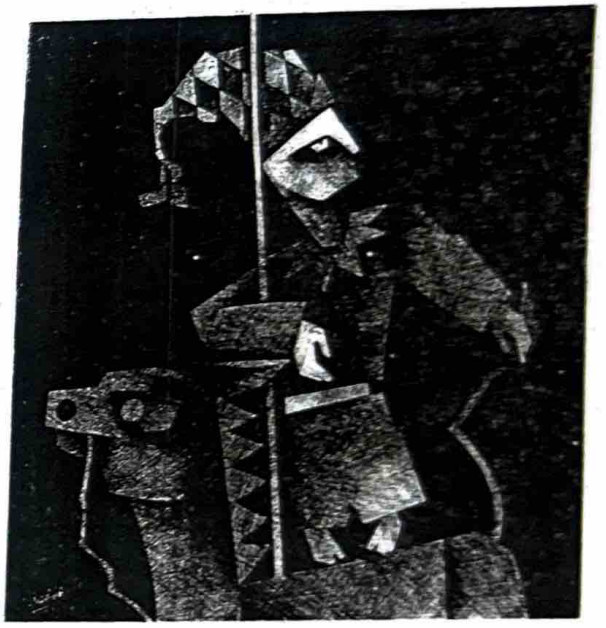

परिकल्पना

© सम्पादक
प्रथम संस्करण : 2018
मूल्य : 375
ISBN : 978-93-87859-85-2

लोकनायक बिरसा मुंडा
के पावन स्मृति को...

371

शिवा नंद तिवारी द्वारा *परिकल्पना*, बी-7, सरस्वती कामप्लेक्स,
सुभाष चौक, लक्ष्मी नगर, दिल्ली-110092 से प्रकाशित और
शेष प्रकाश शुक्ला, गाजियाबाद-201010 से टाइप सेट होकर
काम्पैक्ट प्रिंटर्स, दिल्ली-110032 में मुद्रित

अन्त में मैं अपने उन समस्त शुभचिन्तकों एवं सहयोगियों का कृतज्ञ हूँ,
जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से योगदान दिया है।

अन्त में मैं अपने उन समस्त शुभचिन्तकों एवं सहयोगियों का कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से योगदान दिया है।

–डॉ. सन्दीप श्रीराम पाईकराव

अनुक्रम

राजस्थान के जनजातीय लोक नाट्य और लोक नृत्य — 15
–डॉ. नवीन नन्दवाना

'अपने घर की तलाश में' होने का अर्थ — 27
–डॉ. अरविन्द कुमार यादव

आदिवासी साहित्य में नारी का यथार्थ — 39
–डॉ. राजेश कुमार

आदिवासी समाज से कतराता हिन्दी का सिनेमाई संसार — 45
–डॉ. रश्मि

'नगाड़े की तरह बजते शब्द' में आदिवासी स्त्री — 51
–इबरार खान

आदिवासी समाज में स्त्री — 56
–जमुना मुण्डू

समकालीन आदिवासी साहित्य में जन चेतना — 60
–डॉ. सन्तोष रामचन्द्र आडे

'भीली' लोक साहित्य का सांस्कृतिक वातायन — 67
–डॉ. शाहजाद कुरैशी

आदिवासी जनजीवन : संघर्ष और प्रतिरोध — 72
–डॉ. शबाना हबीब

भीली लोकसाहित्य : आश्चर्यजनक आस्थामूलकता का लोक — 79
–डॉ. तरूण कुमार दांगोड़े

372

आदिवासी उपन्यास साहित्य : समाज एवं संस्कृति 85
—डॉ. पठान रहीम खान

आदिवासियों की सामाजिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्था 91
—डॉ. विमलेश

आदिवासी साहित्य 98
—प्रा. बालिका रामराव कांबळे

आदिवासी लोकजीवन : कोलाम 102
—प्रा. डॉ. सौ. मंगला श्रीराम कठारे

वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में आदिवासी महिलायों का सशक्तिकरण... 106
—संगीता बारला

अद्यतन हिन्दी कथा साहित्य में आदिवासी जीवन की चुनौतियाँ 112
—डॉ. श्रीमती मनीषा शर्मा

झारखण्ड में आदिवासियों की शिक्षा 119
—रोशनी सूर्यवाला सिंह

आदिवासी विस्थापन : समकालीन हिन्दी 127
—डॉ. इन्दु पी.एस.

'बेघर सपने' : टूटते सपनों और विश्वासों के बीच एक आदिवासी... 133
—अभिनव कुमार

सांस्कृतिक अनुचिन्तन : आधुनिक हिन्दी आदिवासी कविताओं में 140
—विद्या ए.एस.

आदिवासियों की त्रासदी की सशक्त अभिव्यक्ति 'पार' 147
—डॉ. सन्तोष विजयराव येरावार

आदिवासी स्त्री जीवन के दास्तान को बयां करने वाली 152
कवियत्री—डॉ. रमणिका गुप्ता
—डॉ. ए.डी. चावडा

राजस्थान के जनजातीय लोक नाट्य और लोक नृत्य

डॉ. नवीन नन्दवाना

भारतीय समाज विविधताओं का समाज है। हमारे देश के विशाल भू-भाग पर अनेक जातियों व धर्मों के लोग निवास करते हैं। जाति, धर्म और क्षेत्र आदि के आधार पर उनकी वेशभूषा, पहनावा, त्योहार, भाषा, रीति-रिवाज और संस्कृति भी पृथक-पृथक है। संस्कृति को परिभाषित करते हुए प्रसिद्ध मानवशास्त्री टायलर लिखते हैं कि—''संस्कृति वह जटिल समग्रता (Complex Whole) है, जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, आचार, कानून, प्रथा और ऐसी ही अन्य क्षमताओं एवं आदतों का समावेश है जो मनुष्य समाज का एक सदस्य होने के नाते प्राप्त करता है।'' यदि बात आदिवासी लोकजीवन और संस्कृति की हो तो हमें उसमें और भी विशिष्टताएँ द्रष्टव्य होती हैं।

सम्पूर्ण विश्व की लगभग 4 प्रतिशत और भारत देश की लगभग 8.61 प्रतिशत आबादी जनजातियों की है। ये जनजातियाँ मैदानों से लेकर जंगलों, पहाड़ों, द्वीपीय और वनीय क्षेत्रों, अगम्य व दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में वास करती है। इनका जीवन, रहन-सहन, खानपान, संस्कृति, तीज-त्योहार और जीवनशैली सब कुछ अपनी विशिष्टताएँ लिए हुए हैं। कृषि, पशुपालन, हस्तशिल्प, वनीय औषधीय और खाद्य पादपों आदि के संकलन; संरक्षण के साथ-साथ ये लोग श्रम से भी जुड़े हैं। विषम भौगोलिक स्थितियों में जीवनयापन करते हुए भी ये लोग अभावों में भी सुभाव महसूस करने वाले जंगल के अनाभिशिक्त राजा हैं।

राजस्थान में मुख्यतः भील, मीणा, गरासिया, सहरिया, कथौड़ी और डामोर आदि प्रमुखता से पाई जाती हैं। ट्राईब पत्रिका में प्रकाशित लेख 'जनजाति : नीति एवं विकास' में वर्णित है कि अनुसूचित जाति एवं जनजाति (संशोधन) अधिनियम 1976 के अनुसार 12 अनुसूचित जनजाति समूह इस प्रकार हैं—

1. भील, भील गरासिया, ढोली भील, डूंगरी भील, डूंगरी गरासिया, मेवासी